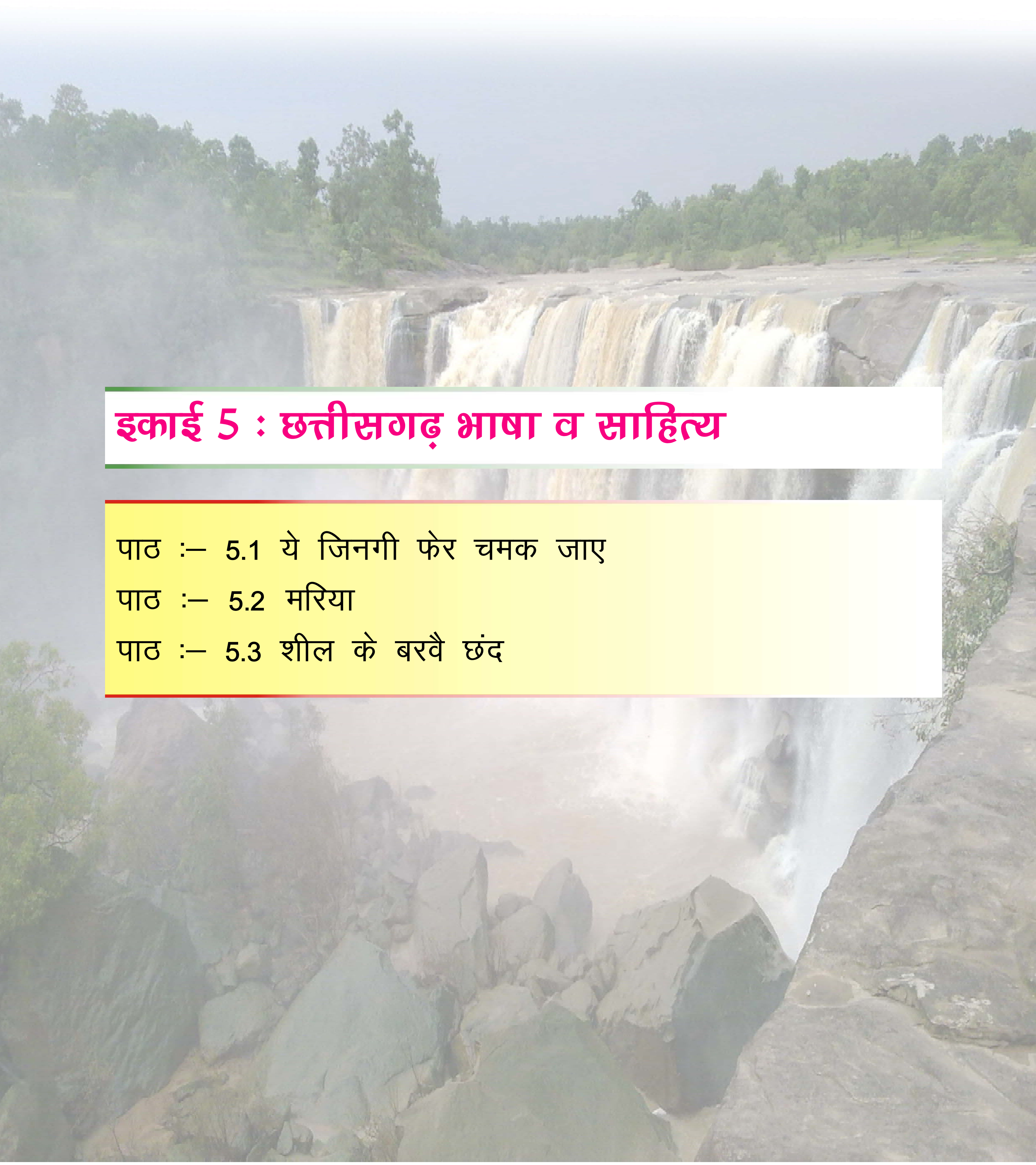

इकाई 5 : छत्तीसगढ़ भाषा व साहित्य

पाठ :– 5.1 ये जिनगी फेर चमक जाए

पाठ :– 5.2 मरिया

पाठ :– 5.3 शील के बरवै छंद

इ
का
ई

5 छत्तीसगढ़ी भाषा व साहित्य

भगवती लाल सेन

छत्तीसगढ़ का वैविध्यपूर्ण सांस्कृतिक परिवेश अपनी अलग ही छवि प्रस्तुत करता है। यहाँ की लोक कलाएँ, लोक संस्कृति और लोक परम्पराओं से समृद्ध जीवन जीते हुए अपनी मुस्कान बिखेरने वाले स्वाभिमानी और आत्मविश्वासी छत्तीसगढ़ी मनखे की एक अलग ही छवि और छाप हर मन में उभरती है। छत्तीसगढ़ की भाषा, साहित्य, कलाओं और लोक परम्पराओं की विशिष्टताओं से परिचित कराकर उनके प्रति सराहना का भाव बच्चों में विकसित करना इस इकाई का मुख्य उद्देश्य है। छत्तीसगढ़ी की अपनी मिठास और कथन भंगिमाओं से विद्यार्थी परिचित होंगे और अपने भाव तथा अनुभव के साथ साहित्य की इन विधाओं से जुड़ भी पाएँगे।

इस इकाई में शामिल पद्य पाठ 'ये जिनगी फेर चमक जाए' हमें नकारात्मक भावों को त्याग कर सकारात्मकता को अपनाने का बीज हमारे मनोभावों में रोपित करता है। पाठ में बेहतर जीवन जीने के सूत्र छिपे हुए नजर आते हैं।

कहानी 'मरिया' को इस इकाई के दूसरे पाठ के रूप में सम्मिलित किया गया है। कहानी में मृत्युभोज की परंपरा के औचित्य पर प्रश्न उठा कर इसे समाप्त करने की प्रेरणा को प्रोत्साहित किया गया है। इस तरह की रुढ़ परम्पराएँ व्यक्ति को हानि पहुँचाकर समाज को प्रगति की राह से पीछे ढकेलने का काम करती हैं और आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति को अधिक संकटग्रस्त बनाती हैं। कहानी इसी निष्कर्ष को हमारे सामने रखती हुई नजर आती है।

इस इकाई का पाठ तीन 'शील के बरवै छंद' छत्तीसगढ़ी के चर्चित कवि शेषनाथ शर्मा 'शील' द्वारा 'बरवै छंद' में रचित पाठ है । विद्यार्थी इस पाठ के द्वारा एक नए छंद और उसकी विशिष्टताओं से परिचित होंगे। भक्तिकाल और रीतिकाल में प्रचलित इस छंद में स्त्री के मनोभावों, विशेष रूप से विवाह के पश्चात विदाई के अवसर पर, ससुराल में रहकर मायके की मधुर स्मृतियों में डूबने और मायके पहुँचकर ससुराल को याद करने का श्रृंगारिक चित्रण है। छंद की भाषा और लयात्मकता से परिचित होकर बच्चे नारी मन की कोमल संवेदनाओं से जुड़ सकें इस तरह का प्रयास इस पाठ में है ।

यह इकाई छतीसगढ़ी भाषा और साहित्य की भावगत विशिष्टताओं से परिचित कराते हुए साहित्यिक सरोकारों और मधुरता का आस्वाद कराती है ।

पाठ – 5.1

ये जिनगी फेर चमक जाए

भगवती लाल सेन

जीवन परिचय

छत्तीसगढ़ के लोकप्रिय कवि भगवती लाल सेन का जन्म 1930 में धमतरी जिले के देमार गाँव में हुआ था। उनकी कविताएँ किसान, मजदूर और उपेक्षित लोगों के बारे में है। सेन एक प्रगतिशील कवि थे, जिनकी कविताओं में आज के जीवन की विसंगतियों पर व्यंग्य प्रहार किए गए हैं और मानवीय अनुभूतियों के प्रति गहरी संवेदनशीलता भी दिखाई पड़ती है। उनकी छत्तीसगढ़ी रचनाओं में कविताओं के दो संकलन पहला–'नदिया मरै पियास' और दूसरा 'देख रे आँखी, सुन रे कान' प्रसिद्ध हैं। उनकी कविताएँ और उनके गीत एक सच्चे इन्सान की देन हैं जो न जाने कितने लोगों को सच्चाई जानने के लिए प्रेरित करती है। 51 वर्ष की अवस्था में इस जन पक्षधर कवि का 1981 में निधन हो गया।

FJZVBH

कोठी म धान छलक जाए, ये जिनगी फेर चमक जाए।
झन बैर भाव खेती म कर, मन के भुसभुस निकार फेंकौ

हाँसौ–गोठियावौ जुरमिल के, सुन्ता के रद्दा झन छेकौ।
गोठियइया घलो ललक जाए, सुनवइया सबो गदक जाए।।1।।

जिनगी भर हे रोना–धोना, लिखे कपार लूना बोना।
जाना है दुनिया ले सबला, काबर करथस जादू टोना।
हुरहा मन मिले झझक जाए हड़िया कस भात फदक जाए ।।2।।

मुँह घुघवा असन फुलोवौ झन, कोइली अस कुहकौ बगिया म
चंदा अस मन सुरुज कस तन, जिनगी महके फुल बगिया म
भेंटौ तो हाथ लपक जाए, गुँगुवावत मया भभक जाए।।3।।

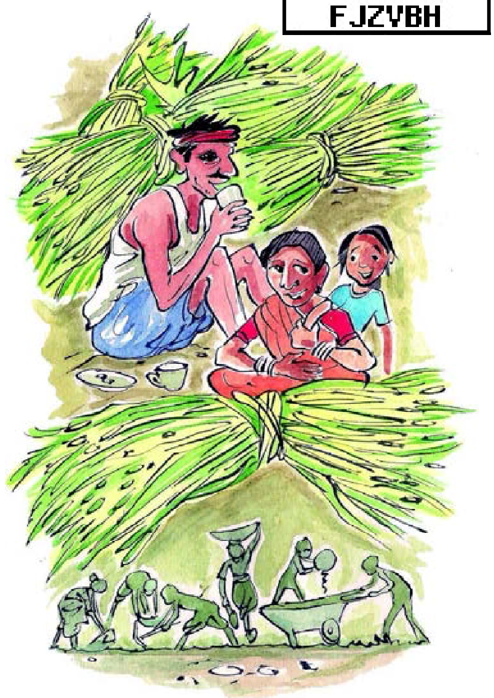

भुइँया के पीरा ल समझौ धरती के हीरा ल समझौ
काबर अगास ल नापत हौ, मीरा के पीरा ल समझौ
कोरा के लाल ललक जाए, बिसरे मन मया छलक जाए ।।4।।

जुग तोर बाट ल जोहत हे, पल छिन दिन माला पोंहत हे
अमरित बन चुहे पसीना तोर, मेहनत दुनिया ल मोहत हे
अँगना म खुसी ठमक जाए, सोनहा संसार दमक जाए,
कोठी म धान छलक जाए, ये जिनगी फेर चमक जाए।।5।।

शब्दार्थ

कोठी – धान रखने की कोठरी; **भुसभुस** – शंका; **गोठियाना** – बात करना; **गदक** – प्रसन्न; **कपार** – मस्तिष्क, मस्तक; **लूना** – फसल काटना; **झझक** – डरना; **हुरहा** – अचानक; **हड़िया** – हंडी; **घुघुवा** – उल्लू (पक्षी); **गुँगुवाना** – सुलगना; **भभकना** – एकाएक आग धधकना; **पीरा** – दर्द; **बिसरे** – भूले; **बाट** – रास्ता; **जोहत** – प्रतीक्षा करना; **माला पोहना** – माला गूँथना; **अमरित** – अमृत।

अभ्यास

पाठ से

1 "कोठी म धान छलक जाए, ये जिनगी फेर चमक जाए।" पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

2 "मुँह घुघुवा असन फुलोवौ झन" ऐसा क्यों कहा गया है?

3 सुंता (सुमति) से रहने से क्या लाभ होता है? लिखिए।

4 बगिया में कोइली जैसा कुहकने के लिए क्यों कहा जा रहा है?

5 "गुँगुवावत मया भभक जाए" पंक्ति में खुलकर स्नेह प्रकट करने को कहा गया है।" इस कथन का क्या उद्देश्य है?

6 पसीने की अमृत से तुलना क्यों की गई है? समझाइए।

पाठ से आगे

FK9RD5

1 "जाना है दुनिया ले सबला" पंक्ति का भाव–विस्तार कीजिए।

2 "भुइँया के पीरा" से कवि का क्या आशय है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

3 "धरती के हीरा" से आप क्या समझते हैं? अपने विचार प्रकट कीजिए।

4 मेहनतकश को दुनिया क्यों पसंद करती है?

5 "काबर अगास ला नापत हौ" पंक्ति के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं?

6 "जिनगी भर हे रोना धोना" आप इस कथन से सहमत या असहमत होने का तर्क प्रस्तुत कीजिए।

भाषा के बारे में

FKIMES

1. पाठ में आए हुए छत्तीसगढ़ी की विभक्तियों एवं संबंध सूचक अव्ययों को छाँटकर लिखिए एवं उनका हिन्दी में भाषांतर कीजिए

उदाहरण– म – में कस – जैसा

2. ''चंदा अस मन सुरुज कस तन'' में कौन सा अलंकार है? पहचान कर उसकी परिभाषा लिखिए।

3. मैली चादर ओढ़ के कैसे द्वार तिहारे आऊँ।

हे पावन परमेश्वर मेरे मन ही मन शरमाऊँ।।

उपरोक्त भजन की पंक्तियों में मनुष्य इस संसार में आकर छल, प्रपंच, काम–क्रोध, लोभ, मोह में फँसकर अपनी काया के कलुषित होने से जनित आत्म अपराध बोध के भाव से है। वह इस मैली काया के साथ ईश्वर के मंदिर में प्रवेश करने से स्वयं ही शर्मिंदा हो रहा है। इस तरह के भाव प्रायः शांत रस के अन्तर्गत देखे जा सकते हैं। कविता 'ये जिनगी फेर चमक जाए' में भी जीवन के प्रति असारता/निःसारता के भाव विद्यमान है।

क. कविता पढ़कर उन पंक्तियों को चुनकर लिखिए जिसमें ये भाव देखे जा सकते हैं।

ख. इस कविता के अतिरिक्त शांत रस की अन्य कविताओं को भी ढूँढ़ कर लिखिए।

4. पूर्व में आपने अभिधा और लक्षणा शक्ति को पढ़ा एवं जाना है। अब निम्न वाक्य को ध्यान से पढ़िये –''सुबह के 8 बज गए हैं।''

इस वाक्य का प्रत्येक व्यक्ति के लिए भिन्न–भिन्न अर्थ होगा :–

जैसे– एक आदमी जो रात में पहरेदारी करता है उसकी छुट्टी के समय से है, कार्यालय जाने वाले व्यक्ति के लिए कार्यालय जाने की तैयारी से है, गृहिणी इसका अर्थ गृह कार्य से जोड़कर देखेगी, बच्चों के लिए इसका अर्थ विद्यालय जाने की तैयारी से है एवं पुजारी इसे पूजा–पाठ से जोड़कर देखेगा।

इस प्रकार जहाँ वाक्य तो साधारण होता है लेकिन उसका अर्थ प्रत्येक पाठक या श्रोता के लिए अलग–अलग या भिन्न–भिन्न होता है, इसे ही व्यंजना शक्ति कहते है एवं इससे उत्पन्न भाव को व्यग्यार्थ कहा जाता है।

योग्यता विस्तार

FKSIGF

1. फसल कटाई के दौरान कृषक की दिनचर्या का वर्णन कीजिए।

2. कृषि एवं कृषक जीवन से संबंधित कोई अन्य कविता का संकलन कीजिए।

3. हिन्दी साहित्य में नौ रस माने गए हैं। यथा–श्रृंगार, हास्य, करूण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भूत, शांत। यद्यपि प्राचीन रस सिद्धांत में 'वात्सल्य' की गणना रसों के अन्तर्गत नहीं की गई हैं, किन्तु सूरदास के पश्चात् इसे भी रस माना गया। इस प्रकार अब रसों की संख्या बढ़कर दस हो गई है।

शिक्षक की सहायता से सभी रसों के उदाहरणों को ढूँढ़कर पढ़िए एवं समझने का प्रयास कीजिए।

FL2EI3

पाठ – 5.2

मरिया

डॉ. परदेशी राम वर्मा

जीवन परिचय

डॉ. परदेशी राम वर्मा जी का जन्म 18 जुलाई, 1947 को भिलाई इस्पात संयंत्र के करीबी गाँव लिमतरा में हुआ। इन्होंने छत्तीसगढ़ी एवं हिन्दी में उपन्यास, कथा संग्रह, संस्मरण, नाटक एवं जीवनी आदि का लेखन किया है। छत्तीसगढ़ी एवं हिन्दी में नव साक्षरों के लिए भी पुस्तकें लिखी हैं। इनके द्वारा पंथी नर्तक स्व देवदास बंजारे पर लिखित पुस्तक 'आरूग फूल' को मध्यप्रदेश शासन द्वारा माधवराव सप्रे सम्मान प्राप्त है। इनका छत्तीसगढ़ी उपन्यास 'आवा' पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर में एम.ए. के पाठ्यक्रम में शामिल है। 2003 में इसी विश्वविद्यालय द्वारा इन्हें मानद डी.लिट की उपाधि प्रदान की गई। इनके लेखन में छत्तीसगढ़ी जनजीवन, लोक संस्कृति की दुर्लभ, मनोहारी और रोचक प्रस्तुति हुई है। वैविध्यपूर्ण लेखन के लिए प्रदेश और देश में इनकी विशिष्ट पहचान है। सम्प्रति स्वतंत्र लेखनरत।

संझौती जल्दी नाँगर ल ढील देकर बेटा – रामचरण अपन एकलौता पोसवा बेटा ला समझइस।

रामचरण के बाई मुच ले हाँस दिस। हाँसत देखि त ओकर बेटा सिकुमार पूछिस– काबर हाँसे दाई? ददा ह बने त किहिस। सँझौती जल्दी ढील दे नाँगर ल काहब म हाँसी काबर आईस भई?

दाई किहिस – देख बेटा, तोरो अब लोग–लइका होगे। तोर उम्मर बाढ़ गे फेर तोर ददा के मया ल मैं देखथँव ग। ददा बर लइका ह जनमभर लइके रिथे रे। तेमा एक ठन बेटा। एक बेटा अउ एक आँखी के गजब मया ग। डोकरा के मया ल देखेंव त हाँस परेंव।

अभी ये गोठ–बात चलते रिहिस। डोकरा उठिस खटिया ले अउ दम्म ले गिर गे। एक ठन गोड़ लझम पर गे। डोकरा ल देख के दाई चिचअइस – सिकुमार दउड़ त बेटा, लथरे अस करथ हे गा। सिकुमार दउड़ के अइस। ददा के एक पाँव, एक हाथ झूल गे। ददा मचिया म एकंगी परे रहिगे। देखो–देखो होगे।

चरणदास बइद ल बलइन। रमेसर मंडल आगे। मनराखन चोंगी पियत खखारत अइस। जे मुँह ते बात लोकवा तो होगे रे सिकुमार, बइद ह बतइस।

मनराखन किहिस– ओकरे सेती मंय किथँव चार सावन सम्मारी जरूरी हे सवनाही नई मनावन। किसानी करबो काहस रे सिकुमार। देख डोकरा ल का होगे। धरम–करम ल बंठाधार करे मे रे बाबू बिपत आथे जी।

रमेसर मंडल किहिस– ये ला चरौदा अस्पताल लेगव जी। जल्दी करव, रामू रोसियागे, किहिस– का चरौदा अस्पताल जाही। मर गेव तुम अंगरेजी दवा के मारे। जाही डोकर हा बघेरा। गोली खाही अउ तेल लगाही तहाँ देख कुदल्ला मारही।

अंकलहा खिसियागे, किहिस– देखो जी, जतर–कतर बात झन करव। कथे –चढ़ौ तिवारी चढ़ौ पाण्डे, घोड़वा गइस पराय। तउन हाल झन होय। अरे ददा जहाँ लेगना हे लेगव। फेर थोरूक सिकुमार ल पूछ लव। सिकुमार ल पूछे के नवबदे नइ अइस। डोकरा के छोटे भाई बल्दू हा किहिस– देखव जी, सब बात के एकै ठन। हम तो सुक्खा सनाथन। घर म भुँजी भाँग नहीं अउ ....

ओकर बात ल काट के अंकलहा किहिस – देख बल्दू घर में राहय ते झन राहयख सेवा करे बर परही। लेगव येला जल्दी।

मचोली में एकंगू सुते–सुते डोकरा काँखिस। किहिस– देखव जी, अब मय जादा दिन के सगा नोहँव। इही गाँव में जनमेंव। इहाँ खेलेंव–कूदेंव। इहें जवान होयेंव। इहें बूढ़ा गेंव अउ इहें बीमार हो गेंव। त भइया हो, इहें मरन दव मोला। मोर दसो अंगरी के विनय हे।

अइसे कहत डोकरा ह दुनों हाथ ल जोरे चाहिस, फेर हाथ ह उठय त लझम परगे रहय एक हाथ हा। डोकरा के आँसू निकलगे।

सिकुमार ल बइद हा दवा बता दिस, अउ किहिस तेलमालिस ज्यादा होय चाही बाबू, अउ सुन सँझौती लान लेबे कारी परेवा। करिया परेवा खवा अउ लहू म मालिस कर, देख फेर तोर ददा कइसे बने होही।

सब झन जइसने आय रिहिन तइसने चल दिन। सिकुमार भिड़गे सेवा करब म। एक पंदरही नई बीतिस डोकरा भगवान घर रेंग दिस।

दुब्बर बर दू असाढ़ होगे। एती खेती–खार फदके राहय। ओ डाहर डोकरा के कारज माड़ गे। गाँव म बइठना बलइन। सिकुमार अरजी करिस– हमर समाज म मरिया भात ल बंद करव किथें सब। महूँ ह विनती करत हँव भई। मरिया भात ल समाज बंगा छोड़ देतिस।

रमेसर मंडल सदा दिन के समाजिक मनखे। रखमखा के उठगे, किहिस देख रे सिकुमार समाज के कान्हून ल हमला झन बता रे बाबू। कान्हून ल हम जानथन। कान्हून हिरसिंग दिरखिन बारे ल सब हम पढ़े बइठे हन जी। करनी दिखय मरनी के बेर। मँय गाँव के पटेल मँय गाँव समाज के कुरहा। बाबू रे, तोर बाप ह जियतभर कान्हून बर ठठ्ठा मड़इस, अब मरे म झन ठठ्ठा कर। दे बर परही भात। सब घर फुदर–फुदर के खाय हव, अब खवाय बर परत हे त कान्हून ल गोहराहू रे।

सब झन रमेसर के संग दे दिन। सिकुमार हो गे अकेल्ला। भात देवर माने ल परगे।

घर डाहर आवत खानी रमेसर ल सुकालू किहिस– अच्छा जम्हेड़े भाँटो, बिछलत रिहिस बुजा ह।

बिछलत रिहिस बुजा ह। अब उड़ाबो–लडुवा– पपची डट के।

रमेसर ओकर पीठ म एक मुटका मारिस अउ हाँस के कहिस–उहाँ तो मुँह म लडुवा गोंजे रेहे रे। अउ अब पपची बर नियत गड़िया देस। तोर बर केहे हे रे बाबू, ''छिये बर, न कोड़े बर, धरे बर खोखला।''

हाना सुन–सुना के हाँसत मुचमुचावत सारा–भाँटो घर आ गे। सिकुमार के होगे जग अँधियार।

घर आके सिकुमार अपन दाई ल सब बतइस। दाई किहिस– पंच मन कुछु नइ किहिन रे। सिकुमार किहिस–दाई, सब किहिन तोर अँगना म खाबो, तिहि बहुत बड़ बात ये। पबरित करबो काहत हें।

दाई किहिस– बुड़ा के काहत हें नहकौनी दे। वाह रे जमाना। दुनिया कहाँ ले कहाँ आगे रे। हमरो उम्मर पहागे सब देखत देखत पढ़ई–लिखई बहुत होगे बाबू, फेर दुनिया उहें के उहें हे। अरे! जब समाज के बड़े मन रइपुर के अधिवेशन म तय कर दीन के मरिया के भात खववनी बंद करे चाही त बंद कर देबर चाही। फेर वाह रे मनुख जात। करे के आन, केहे के आन। नियम बनाये हें के नेवता खाय बर साते झन जाहीं, फेर जाथें सत्तर झन। मट–मटमट–मट। मोटर–गाड़ी से भरा के नेवता खाय बन जाथें। अब तो बाबू रे, माई लोगन घलो जात हें नेवता खाय बर। एसो बड़े मंगह पारा बिहाव होइस त टूरी मन नेवता खाय बन आगें। अउ बरात म जो टूरा मन नाचिन।

सब मंद मउहा पीये रथें, नाचबे करहीं। सिकुमार समझइस।

दाई किहिस'–मंदे मउहा त पीही रे बाबू। तोर बाबू त चल दिस। गजब बड़ नाचा के कलाकार ग। खुदे गीत बनावय। हमरे गाँव के समारू अउ रिखी जोक्कड़ राहँय। कुछु नई जमिस त तोर बाबू गीत बनइस ग.... रिखि राम सोच के काहत हे समारू ल

दूध–दही पीबोन भइया, नई पीयन दारू ल।

फेर होत हे उल्टा, दूध–दही नँदा गे। सब धर लिन दारू। दारू पी के पंचइती करथें। अउ मरिया के भात ल खाय बिन नइ राहन किथें। काहत–काहत दाई रो डारिस।

मरता क्या न करता। आखिर दो एक्कड़ खेत बेंचागे। खात–खवई म सिरागे रुपिया। खेत गय त बइला ला घलो बेच दिस सिकुमार, खेतिहर, किसान ले मजदूर होंगे। बनिहार होगे। रेडिया म गीत बाजय......

अब बनिहार मन किसान होगे रे,

हमर देस म बिहान होगे रे।

त सिकुमार रो डरय। ओ सोचय कोन जनी कहाँ के मजदूर किसान होगे। मँय तो किसान ले मजदूर होगेंव। बनिहार होगेंव।

ठलहा का करतिस, बनिहारी करे लागिस। एक दिन गाँव के चटरू भूखन ह ओला किहिस–सिुकुमार, पुलुस बनबे?

सिकुमार अकबकागे। पूछिस– कोन मोला पुलुस बनाही भाई? भूखन किहिस– करे करम के नागर ल भुतवा जोतय। तोर बर मौका हे। मँय रोज जाथंव भेलई। उहाँ हे रामनगीना सिंह। हमर दोस। ओकर पुलुस कंपनी हे। पाँच सौ रुपिया लागही। ओला देबे त ओ हा तोला पुलुस बना दिही। तँय तौ चौथी पास हस। धीरे–धीरे बने काम करबे त हवलदार हो जबे।

सिकुमार किहिस– कस जी, कइसे पाँच सौ म पुलुस बन जाहूँ। ठठ्ठा झन मड़ा रे भाई।

भूखन किहिस– तोला पेड़ गिनना हे ते आमा खाना हे जी। पुलुस के काम। ड्रेस पुलुस के। ठाठ के काम रिही। आजकल प्रावेट पुलुस हें। उही मन सब सुरच्छा के काम देखथें। आगू आ, आगू पा। किथें नहीं, आगम भँइसा पानी पीये, पीछू के पावय चिखला। अभी भरती चलत हे। काल तँय बता दे बाबू।

सिकुमार संसों म परगे। अपन बाई ल बतइस। बाई किहिस मोर सों सौंटी बाँचे हे। ले जाव। बेच लव। तुम रइहू ते कतको साँटी आ जही।

सिकुमार किहिस– इही ले कहे गे रहे तन बन नइये लत्ता, जाय बर कलकत्ता। खाय बर घर म चाउँर नईये मैं पुलुस बने बन तोरे गोड़ के गहना उतारत हँव।

बाई किहिस– दुख सब उपर आथे। राजा नल पर बिपत परे तब भूँजे मछरी दाहरा म कुदगे। समे ताय सिकुमार बाई के बात ल मान गे। साँटी बेचागे। दूसर दिन भूखन संग गीस। रामनगीना संग ओला देख के किहिस– वाह जवान। खाने को बासी, मगर देखो शरीर। जबर जवान हे भाई। भरती कर लेते हैं भाई बाकी काम तगड़ा है, हिम्मत का है खेत नहीं जोतना है। दादागिरी का मुकाबला करना है। कर सकोगे न।

सिकुमार अपन काम के जगा म गीस। तोड़फोड करइया साहेब मन गाड़ी म बइठ गे रहय। सिकुमार पाछू के डाला म बइठगे। गाड़ी चल परिस। जाके नरवा तीर के एक गजब बड़ घर म गाड़ी रुक गे। साहेब मन अपन दल के तोड़ फोड़ वाला मन ल किहिस– धरव रे भइँस मन ल। चढ़ावव गाड़ी म । तोड़ दव सब खटाल ल।

अतका सुनना रिहिस के खटाल मालिक लउठी बेड़गा धर के आगे। लगिन गारी देय। अब सब साहेब गाड़ी म चढ़ गें। गाड़ी भर्र के भगा गे। बाँच गे सिकुमार। खटालवाला मन ओही ल पा परिन। गजब बजेड़िन अउ छोड दिन, मूडी कान फूट गे सिकुमार के। रोवत ललावत कइसनों करके अपने दफ्तर अइस। अपन साहेब रामनगीना ल किहिस– साहेब मार खवाय बर कहाँ भेज दे रहेव। गजब ठठाय हे ददा। देख लव।

रामनगीना किहिस– अरे घोंचू, तुम्हारी आज से छुट्टी। मार खाके आनेवाले का यहाँ क्या काम। जाओ अपने गाँव। भूल जाओ नौकरी।

सिकुमार किहिस– सरजी, आनके कारन मार खायेंव। दवा दारू बर कुछु देहू के नहीं।

अब रामनगीना गुसियागे। किहिस– भागता है कि नहीं, कि दूँ एकाद हाथ मैं भी। बड़े आये हैं दवा का पैसा मांगने। अरे जिनसे मार खाकर आया है उनसे मांग। हम क्यों देंगे?

ये तरा ले सिकुमार के छूट गे नौकरी। घर म ओकर महतारी अऊ घरवाली नइ बोलिन।

गाँव के हितु पिरितु सकलइन अउ किहिन– देखों जी बाहरी मनखे मन तोला कइसे मरवा दिन। तोला रोजी माँगे बर बाहरी मनखे करा नइ जाना रिहिस।

सिकुमार किहिस– देखो जी, कहावत है– भूख न चीन्हें जात कुजात, नींद न चीन्हें अवघट घाट। बाहरी हा तो हाड़ा गोड़ा टोरवा दिस अउ तूमन सदा दिन के संग के रहैया मन का कमती करेव। बाप के मरिया के भात नई छोड़ेव। मोर खेती बेचागे। में किसान ले मजदूर होगेंव।

गरीब बर सब के चलथे, घरवाला और बाहरी सब गरिबहा ल ठठाथे। अपन अउ बिरान सब भरम ताय। अब भइया हो अंते–तंते बात छोड़व। जउन होगे तउन होगे। जिनगी भर सीखे बर परथे। मोर बर गाँव के पटेल अउ भेलई के रामनगीना सिंह दूनों बरोबर हे।

मोरो दिन बहुरही। किसान ले मैं बनिहार हो गेंव। तुँहर बात मानके मरिया–हरिया के भात खवा के लइका मन के मुँह म पेच गोंज पारेंव। अब कहाँ हे मरियाभात खवइया समाज? तेकर सेती भइया में सोच डारेंव, बाँह भरोसा तीन परोसा। न जात, न कुटुम, न अपन, न बिरान। धन ले धरम हे। अब ककरो उभरौती म नइ आवँव। देख सुनके रेगिहँव। अब तो चारों मुड़ा अंधियार हे। आती के धोती, जाती के लिंगोटी। ओकर दुख ल देख के बिसाहू किहिस– सिकुमार! भले अकेल्ला रहि जते फेर खेत बेंच के मरिया के भात झन खवाते। जीयत हें तेकर बर सोचना चाहीं देखा–देखी नइ करे चाही सिकुमार।

सिकुमार किहिस– चेथी के आँखी अब आगू डाहर अइस बिसाहू। अब तो एक ठन परन है, मर भले जहूँ फेर मरिया के भात नइ खवावँव।

शब्दार्थ

सँझउती – शाम; **पोसवा** – पालित; **डोकरा** – वृद्ध; **मचिया** – छोटा खाट; **रोसियाना** – गुस्सा होना; **गोटी** – गोली; **लझम** – काम नहीं करना (सुस्त); **अरजी** – विनय (प्रार्थना); **गोहराहूँ** – निवेदन करूँगा; **जम्हेड़े** – डाँटा; **तनखा** – वेतन।

अभ्यास

पाठ से

1. रामचरण के लकवे का इलाज अस्पताल की जगह वैद्य के द्वारा क्यों कराना पड़ा?
2. सिकुमार ने बैठक में क्या विनती की?
3. 'दुब्बर बर दू असाढ़ होगे' का क्या मतलब है?
4. सिकुमार किसान से मजदूर कैसे बन गया?
5. सिकुमार की माँ क्या कहते–कहते रो पड़ी?
6. ''गरीब बर सबके चलथे, घर वाला और बाहिरी सब गरीबहा ल ठठाथें।'' सिकुमार ने ऐसा क्यों कहा?
7. 'मरिया' प्रथा ने सिकुमार की जिंदगी को किस तरह बदल दिया?

पाठ से आगे

FLBAJQ

1. कहानी में मरिया प्रथा के बारे में बताया गया है। इस प्रथा के अन्तर्गत मृतक के परिवारजन को समाज वालों को भोजन कराने की बाध्यता है। अपने आस–पास में व्याप्त ऐसी ही किसी एक समस्या पर साथियों से चर्चा कर प्राप्त विचारों को लिखिए।
2. वैद्य ने रामचरण के लकवे के उपचार के लिए काले कबूतर के खून से मालिश करने का उपाय बताया। आपके आस–पास भी कई बीमारियों के ऐसे ही अंधविश्वास भरे इलाज किए जाते होंगे। इस प्रकार के इलाजों की सूची बनाइए तथा इनसे होने वाले नुकसान पर शिक्षक तथा साथियों से चर्चा कीजिए।
3. कहानी में सिकुमार को भूखन ने पुलिस की नौकरी करने की सलाह दी ताकि वो ठाठ से रह सकें। अपने साथियों से चर्चा कीजिए कि वो क्या बनना चाहते हैं और क्यों?
4. कहानी में सिकुमार गाँव छोड़कर पुलिस बनने भिलाई जाता है। आपके गाँव तथा समाज के लोग भी विभिन्न कारणों से शहर जाते होंगे। अपने साथियों से चर्चा कीजिए और उन कारणों को लिखिए।

भाषा के बारे में

FLK6LD

1. मरिया कहानी में कई लोकोक्तियों का प्रयोग हुआ है। जैसे ''दुब्बर बर दो असाढ़ होगे'' अर्थात् विपदाग्रस्त व्यक्ति पर और विपदा आना तथा ''चढ़ौ तिवारी चढौ पाण्डेय'', घोड़वा गईस पराय'' अर्थात् प्राप्त अवसरों को गँवाने वालों को पछताना पड़ता है। लोकोक्तियाँ लोक अनुभव से बनती हैं जिसे किसी समाज कुछ अपने लंबे अनुभव से सीखा होता है, उसे ही एक वाक्य में बाँध दिया जाता है। लोकोक्तियों को

कहावत या जनश्रुति भी कहते हैं। लोकोक्ति, सम्पूर्ण वाक्य होता है तथा इसका प्रयोग स्वतंत्र रूप से अथवा किसी अन्य वाक्य के साथ भी किया जा सकता है। लोकोक्ति को छत्तीसगढ़ी में हाना कहते हैं।

(क) मरिया कहानी में आई लोकोक्तियों को खोजिए और उनके अर्थ लिखिए।

(ख) अपने आसपास, समाज मे ंप्रचलित लोकोक्तियों का संकलन कीजिए तथा उनके अर्थ साथियों और शिक्षकों के सहयोग से लिखिए।

2. इन वाक्यों को ध्यान से देखिए–

(क) रामचरण के बाई मुच ले हाँस दिस।

(ख) डोकरा उठिस खटिया ले अउ, दम्म ले गिर गे।

इन वाक्यों में 'मुच ले' तथा 'दम्म ले' जैसे शब्दों का प्रयोग, क्रिया के ध्वन्यात्मकता को प्रकट करने के लिए किया गया है। इन शब्दों के प्रयोग से भाषा सौंदर्य में वृद्धि होती है। हम भी ऐसे ही बहुत सारे शब्दों का प्रयोग अपनी बोल–चाल की भाषा में करते हैं।

(क) अपने साथियों से चर्चा करें और ऐसे अन्य शब्दों की सूची बनाकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(ख) साथियों के साथ समूह में चर्चा करें और ऐसे ही शब्दों वाले वाक्यों से एक अनुच्छेद की रचना करें।

योग्यता विस्तार

1. सिकुमार को समाज के लोगों द्वारा दबाव डालकर मरिया खिलाने के लिए मजबूर किया गया। इसी कारण उसे अपने खेत बेचने पड़े और वह किसान से मजदूर बन गया। किसानों को और कौन–कौन सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, इन समस्याओं का उनके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है, अपने आसपास के लोगों से चर्चा कीजिए और उनका लेखन भी कीजिए।

FLU2N1

पाठ – 5.3

शील के बरवै छंद

शेषनाथ शर्मा 'शील'

FH3XPN

जीवन परिचय

छत्तीसगढ़ी के क्लासिक कवि शेषनाथ शर्मा जी का जन्म पौष शुक्ल द्वादसी संवत 1968 (14 जनवरी 1914) जांजगीर में हुआ। आप संस्कृत, बंगला, अंग्रेजी, उर्दू, मराठी और हिंदी साहित्य के अधिकारी विद्वान थे। आपकी रचनाएँ कानपुर के सुकवि, काव्य कलाधर, राष्ट्र धर्म, अग्रदूत, संगीत सुधा, विशाल भारत जैसे उच्च कोटि की पत्रिकाओं में छपती थी। **कविता लता, और रवीन्द्र दर्शन** आपका प्रकाशित काव्य ग्रंथ है। आपने हिन्दी के अतिरिक्त, छत्तीसगढ़ी में भी लेखन कार्य किया। रस सिद्ध कवि शील जी ने छत्तीसगढ़ी में बरवै छंद को प्रतिष्ठित किया। डॉ. पालेस्वर शर्मा जी के शब्दों में शील जी की प्रारंभिक कविताएँ छायावादी है। आपकी मृत्यु 7 अक्टूबर,1997 में हो गई।

खण्ड–अ

बिदा के बेरा

सुसकत आवत होही, भइया मोर,
छइहा मा डोलहा, लेहु अगोर।

बहुत पिरोहिल ननकी, बहिनी मोर,
रो–रो खोजत होही, खोरन–खोर।

तुलसी चौंरा म देव, सालिग राम,
मइके ससुर पूरन, करिहौ काम।

अँगना कुरिया खोजत, होही गाय,
बछरू मोर बिन काँदी, नइच्च खाय।

मोर सुरता म भइया, दुख झन पाय,
सुरर–सुरर झन दाई, रोवै हाय।

तिया जनम के पोथी, म दुई पान,
मइके ससुर बीच म, पातर प्रान।

खण्ड–ब

ससुरार म मइके के सुरता

इहाँ परे हे आज, राउत हाट,
अरे कउवाँ बइठके, कौंरा बाँट।

दूनों गाँव के देव, करव सहाय,
मोर लेवाल जुच्छा, कभु झन जाय।

इहाँ हावय कबरी, दोहिन गाय,
ननकी ऊहाँ गोरस, बिन नइ खाय।

मइया आइस कुलकत, राँधे खीर,
हाय विधाता कइसन, धरिहौं धीर।

पानी छुइस न झोंकिस, चोंगी पान,
हाय रे पोथी धन रे, कन्या दान।

मोर संग म नहावै, सूतै खाय,
ते भाई अब लकठा, म नई आय।

भाई आधा परगट, आधा लुकाय,
ठाढ़े मुरमुर देखत, रहिथे हाथ।

खण्ड–स

मइके म ससुराल के सुरता

तन एती मन ओंती, अड़बड़ दूर,
रहि–रहि नैना नदिया, बाढ़ै पूर।

मन–मछरी ला कइसे, परिगे बान,
सब दिन मोर रहिस अब होगे आन।

मन–मछरी ह धार के, उल्टा जाय,
हरके ला मन बैरी, नइच्च भाय।

मुँह के कौंरा काबर, उगला जाय,
रहि–रहि गोड़ फड़कथे, काबर हाय।

मोर नगरिहा पावत, होही घाम,
बैरी बादर तैं कस, होगे बाम।

थकहा आहीं पाहीं, घर ल उदास,
कइसे तोरा करहीं, बूढ़ी सास।

कइसे डहर निहारौं, लगथे लाज,
फुँदरा वाला बजनी, पनहीं बाज।

शब्दार्थ

सुसकत – सुबकना, सिसकना; **डोलहा** – डोली उठाने वाला; **आवत होही** – आते होंगे; **छइँहा** – छाया; **लेहु** – लेना; **अगोर** – प्रतीक्षा करना; **पिरोहिल** – प्यारी, प्यारा; **ननकी** – छोटी, छोटा; **खोरन–खोर** – गली–गली; **कुरिया** – कमरा (कक्ष); **कांदी** – हरी घास; **सुरता** – याद; **सुरुर–सुरुर** – याद करके रोने की क्रिया; **तिया** – स्त्री; **पातर** – पतला; **हाट** – बाजार; **कउवां** – कौआ, काग; **कौंरा** – ग्रास, निवाला; **लेवाल** – बहन या पत्नी को विदा करा कर साथ ले जाने वाला; **जुच्छा** – खाली; **कबरी** – चितकबरी; **गोरस** – गाय का दूध; **कुलकत** – प्रसन्न चित्त; **राँधे** – भोजन बनाए; **झोंकन** – पकड़ना; **हरके** – मोड़ना; **घाम** – धूप; **डहर** – रास्ता; **बजनी पनही** – चमड़े का वह जूता जिसे पहन कर चलने पर आवाज करता हो; **बाज** – बजना; **तोरा** – प्रबंध, व्यवस्था; **बाम** – विपरित।

अभ्यास

पाठ से

1. ''सुसकत आवत होही भइया मोर'' पंक्ति के अनुसार दुल्हन की मनोदशा का उल्लेख कीजिए।
2. मायका एवं ससुराल के बीच की स्थिति को कवि ने 'पातर प्रान' क्यों कहा है?
3. बहन को लिवाने पहुँचा भाई अनमना सा क्यों है?
4. नायिका के मन का, धारा के विपरीत जाने का संदर्भ दीजिए।
5. नायिका अपने पति के कष्ट की कल्पना करके दु:खी हो जाती है। पाठ में आए हुए उदाहरणों का उल्लेख करते हुए समझाइए।

पाठ से आगे

1. विवाह पश्चात् लड़कियों का ससुराल जाना वैवाहिक रीति का एक अंग है। इस रीति पर अपने विचार लिखिए।
2. आपकी शाला में विदाई कार्यक्रम आयोजित किए जाते होंगे। शाला के विदाई कार्यक्रम एवं घर या पड़ोस में बेटी की विदाई का तुलनात्मक वर्णन कर लिखिए।

FMCTRB

3. ''राउत, हाट, बाजार, मेले गाँव से गहरे जुड़े होते हैं'' इस कथन पर अभिमत दीजिए।
4. विवाह पूर्व लड़की की मायके के प्रति कैसी जिम्मेदारी होती है और विवाह पश्चात् ससुराल में उसके क्या–क्या दायित्व होते हैं? अपनी माँ, भाभी अथवा विवाहित बहनों से उनके अनुभव सुनिए एवं उनका लेखन कीजिए।
5. कविता में कई स्थलों पर सामाजिक मान्यताओं का उल्लेख किया गया है जैसे–गोड़ फड़कना,

बहन/बेटी के घर का अन्न–जल ग्रहण न करना, कौआ का कौंरा बाँटना आदि अपने साथियों के साथ चर्चा कर इनके विषय में अपने विचार लिखिए।

6. हम सभी के पास किसी न किसी प्रकार की जिम्मेदारियाँ होती हैं। जब हम अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन अच्छे से करते हैं तो हमें आत्मसंतोष का अनुभव होता है। आपकी व आपके परिजनों की क्या–क्या जिम्मेदारियाँ हैं? इसे ध्यान में रखते हुए निम्न तालिकाओं को पूरा कीजिए। आप इस संदर्भ में साथियों से चर्चा कर सकते हैं।

अभिभावकों की		
पारिवारिक	सामाजिक	वैयक्तिक

अपनी		
पारिवारिक	सामाजिक	वैयक्तिक

भाषा के बारे में

1 निम्नलिखित शब्द समूह के स्थान पर छत्तीसगढ़ी का एक शब्द लिखिए–

	शब्द समूह		एक शब्द
(क)	जो नाँगर (हल) चलाता है	–	नँगरिहा
(ख)	कुएँ या तालाब से घड़े में पानी भरकर लाने वाली स्त्री	–	————————
(ग)	काम करने वाला	–	————————
(घ)	आम का बगीचा	–	————————

2. काव्य में जहाँ वर्णों की आवृत्ति होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण– ''तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।''

यहाँ 'त' वर्ण की आवृत्ति हुई है, इसलिए यहाँ अनुप्रास अलंकार हैं।

इसी प्रकार पाठ में आए हुए अनुप्रास अलंकार के अन्य उदाहरणों को पहचान कर लिखिए।

3. जहाँ उपमेय (जिसकी तुलना करते हैं।) में उपमान (जिससे तुलना की जाती है) का आरोप किया जाता है, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

उदाहरण– मैया मैं तो चंद्र–खिलौना लैहौं।

यहाँ खिलौने (उपमेय) को चाँद (उपमान) ही मान लिया गया है।

पाठ में आए हुए रूपक अलंकार के अन्य उदाहरणों को पहचान कर लिखिए।

4. बरवै छंद– यह अर्ध सम मात्रिक छंद है, जिसके विषम चरणों (पहले व तीसरे चरण) में 12–12 एवं सम चरणों (दूसरा व चौथा चरण) में 7–7 मात्राओं की यति से 19 मात्राएँ होती हैं। अंतिम में गुरु–लघु मात्राएँ होती है।

उदाहरण– भाषा सहज सरस पद, नाजुक छंद, (12, 07 = 19)

जइसे गुर के पागे, सक्कर कंद। (12, 07 = 19)

इस प्रकार पाठ से अन्य पदों की मात्राओं की गणना कीजिए।

5. इसके बारे में भी जानिए–

शब्द गुण– ''गुण साहित्य शास्त्र में काव्य शोभा के जनक हैं।''

इसके तीन प्रकार हैं–

(क) माधुर्य गुण– चित्त को प्रसन्न करने वाला गुण माधुर्य होता है। शृंगार रस का वर्णन इससे भावपूर्ण होता है।

(ख) प्रसाद गुण– चित्त को प्रभावित करने वाला गुण प्रसाद होता है। शांत रस एवं करुण रस का वर्णन इससे भावपूर्ण होता है।

(ग) ओज गुण– चित्त को उत्तेजित करने वाला गुण ओज गुण होता है। वीर रस का वर्णन इससे भावपूर्ण होता है।

प्रस्तुत पाठ में किस शब्द गुण की बहुलता है? नाम लिखकर उदाहरण दीजिए।

योग्यता विस्तार

1. छत्तीसगढ़ी के विवाह–गीतों का संकलन कीजिए एवं कक्षा में उसका सस्वर गायन कीजिए।

2. अपने क्षेत्र में प्रचलित विवाह की रस्म पर एक छोटा लेख लिखिए।

FYZY9I